क्या होगा?
काव्य संग्रह
नमन जोशी

क्या होगा?
नमन जोशी

Copyright © Naman Joshi
All Rights Reserved.
This book has been self-published with all reasonable efforts taken to make the material error-free by the author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.
The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor. Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.
Made with ❤ on the Notion Press Platform
www.notionpress.com

आभार

निष्ठापूर्वक यह पुस्तक आपके हाथों में आ ही गई यह काव्य-संग्रह
कई लोगों के सहयोग और समर्थन के बिना संभव नहीं हो पाता।
सबसे पहले, मैं अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ उन सभी को
जिन्होंने मुझे प्रेरित किया और मेरी कविताओं को आकार देने में मेरा
साथ दिया मैं अपने माता-पिता को उनके अटूट प्रेम और प्रोत्साहन के
लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। उनके विश्वास ने ही मुझे नया मार्ग
दिया जिस कारण मैं इस कविता संग्रह को तैयार कर सका.
अंत में उन सभी पाठको को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ जो समय
निकालकर इस कविता संग्रह को ग्रहण करेंगे। पुस्तक के इस आभार
वाले भाग में मैंने किसी भी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं लिखा है
उसके लिए माफ़ी चाहूंगा पर मुझे पता है इसे पढ़कर उन सभी लोगों
को वो सारे किस्से याद आ जाएंगे जब उन्होंने मेरा उत्साहवर्धन किया
जिसके परिणामस्वरूप में इस लघु काव्य संग्रह को लिख पाया.
अपनी प्रतिक्रिया मुझे भेजे- namanjoshi543@gmail.com

तुम कव्वे हो
3.
देह काली थी
4.
तकनीक से सन्देश
5.
आश का चूना
6.
चित्र बोलता है
7.
किधर है जाना
8.
वो मरा नहीं शहीद हुआ
9.
खुले उरोज
10.
शहर
11.
क्या होगा ?
12.
शेर घास खाएगा
13.
समस्या ही समाधान.
14.
पतझड़
15.
एकदम जुगाड़ से
16.
रोना था
17.
पहाड़
18.
लड़ता रहूँगा फिर भी मैं
19.
तुम क्यों डरती हो
20.
बेरंग खुशियाँ
21.
जब हंसी बनी होगी
कवि के विषय में
फिर मिलेंगे 'क्या हुआ' के साथ
गद्य लेखन (सैंपल)
क्रियाकलाप
क्रियाकलाप

Cover designed by Naman Joshi

तन के चलो हिम्मत से चलो ये धरा बहुत कुछ कहती है
नदियों में पत्थर होते ही है तब भी वो सर सर बहती है .

प्रस्तावना

मित्रों और कविता प्रेमियों,

आपके समक्ष प्रस्तुत है "क्या होगा?" - कविताओं का यह संग्रह, जो जीवन के अनिश्चित मार्ग पर चलते हुए उठने वाले प्रश्नों का आईना है।

"क्या होगा?" - यह वह सवाल है जो शायद हम सभी ने कभी न कभी खुद से पूछा है। प्रेम, सपने, भविष्य - हर चीज़ अनिश्चितता के घेरे में रहती है। यह संग्रह उन्हीं अनिश्चितताओं को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास है।

इन कविताओं में मैंने उन क्षणों को शब्दों में ढालने का प्रयास किया है, जहां हृदय में जिज्ञासाएँ जन्म लेती हैं - प्रेम मिलेगा या धोखा, जिंदगी मिलेगी या मौत नसीब होगी? पहाड़ बचेगा या गिर जाएगा, सफलता की राह खुलेगी या असफलता का साया रहेगा? जीवन हँसी से भरपूर होगी या आँसू से ही जीवन उन्मादित हो जाएगा? हिमालय बचेंगे या पिघल जाएंगे आदि.

यह संग्रह इन सवालों का उत्तर देने का दावा नहीं करता, बल्कि उन्हें और गहरा बनाता है। मेरी इच्छा है कि आप इन कविताओं को पढ़ते समय अपने ही अनुभवों के धागे इनसे जोड़ें, अपने भीतर के

"क्या होगा?" पर मंथन करें, और शायद इन पंक्तियों में अपने प्रश्नों के कुछ निजी जवाब खोज पाएं।

पढ़ते-पढ़ते आप भी सोचिये क्या हुआ था? क्या हो रहा है? और अब क्या होगा?

भूमिका

मेरे प्रिय पाठकों

पुस्तक प्रकाशन के दौरान भूमिका लिखना मुझे सबसे कठिन कार्य लगता है क्योकिं अधिकांश पुस्तकों में भूमिका को बाँधा जाता है जबकि मेरी पुस्तक 'क्या होगा' का उद्देश्य यही है कि जब हम कुछ करते है या नहीं करते है तब क्या होगा? कोई कार्य के करने से क्या होगा उस कार्य को न करने से क्या होगा. अगर मैं खुद से सवाल करूँ भूमिका लिखने से क्या होगा? और न लिखने से क्या? तो मैं समझता हूँ लिखने से पाठको को आसानी होगी मुझे समझने में और न लिखने से उन्हें आजादी मिलेगी मुझे समझने में.

मुझे आपसे इस बात को नहीं छिपाना चाहिए कि मेरी कविता का स्तर स्थिर नहीं है, ये संभव है कोई कविता आपको महसूस हो और कोई आपको बिना छुए ही निकल जाए इसका एक कारण ये भी है कि ये रचनाये आठ वर्षों के अंतराल में लिखी गयी है और जैसा कि आपको विदित है कि समय एक जैसा नहीं रहता इसलिए मेरी काव्य शैली भी आपको एक जैसी नहीं दिखेगी इसके लिए मैं आपसे पहले ही क्षमा मांगता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि पढ़ते समय आप मुझे आलोचना के घेरे में केवल मेरे भाषा और शैली को आधार बनाकर नहीं पटकेंगे. पर सबसे महत्वपूर्ण बात है कि क्या होगा? जिसको समझने के लिए आप और मैं दोनों समय निकाल रहे है. मैं मानता हूँ कि ये कविताएँ जवाब देने का दावा नहीं करती, बल्कि सवालों को और गहरा बनाती हैं। उम्मीद है कि आप इन कविताओं को पढ़ते समय अपने ही अनुभवों से जुड़ेंगे, अपनी जिज्ञासाओं पर चिंतन करेंगे, और शायद अपने खुद के "क्या होगा?" के जवाब तलाशने की प्रेरणा पाएंगे. सुख और दुःख, जीवन और मृत्यु , हंसना और रोना, मिलना और बिछड़ना, बनना और मिटना आदि सभी इसी संसार के सवाल है और ये सब हमें सोचने पर मजबूर करते है क्या होगा? यह संग्रह न तो उपदेश देता है और न ही भविष्यवाणी करता है। बल्कि, यह आपको उन सवालों के साथ चलने का न्योता देता है, जो हर कदम पर हमारा पीछा करते हैं। "क्या होगा?" ये सिर्फ एक सवाल नहीं, बल्कि संभावनाओं का द्वार है। तो आइए, इन कविताओं के साथ मिलकर अनजान रास्तों पर कदम बढ़ाएं।

आपका साथी

नमन जोशी

पावती (स्वीकृति)

पहाड़ को समर्पित,विशाल हिमालय को समर्पित

"क्या होगा?" - यह सिर्फ एक कविता का शीर्षक नहीं, बल्कि जीवन का एक सार है। इस संग्रह को लिखते समय, मैंने उन क्षणों को शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है जब हम अनिश्चितताओं के बीच खड़े होकर अपने भविष्य को लेकर सवाल उठाते हैं।

मुझे उम्मीद है कि ये कविताएं आपको अपनी जिज्ञासाओं का सामना करने, अपने सपनों का पीछा करने और जीवन की अनिश्चितताओं को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करेंगी।

आमुख

जीवन एक यात्रा है, हर मोड़ पर नया सवाल, हर कदम पर नया "क्या होगा?" यह सवाल ही हमें आगे बढ़ाता है, संभावनाओं के द्वार खोलता है। कभी रोमांच से भर देता है, तो कभी चिंता की लहर ला देता है।

तो चलिए विशाल हिमालय को प्रणाम कर कविताओं की दुनिया में प्रवेश करते है जहाँ सबसे बड़ा सवाल है क्या होगा?

1. मुरझाया नहीं हूँ

मुरझाया नहीं हूँ,
बस शुष्क पाले का असर है,
रंगीन धूप के साथ,
फिर से खिल उठूंगा मैं।
रंगीन धूप,

सुबह उतरेगी,
छबीले आसमान से,
फिर क्या?
पाला परी की तरह,
ऊपर उड़ने लगेगा.
और
रंगीन धूप का असर,
मुझ पर चढ़ने लगेगा।
पता है,
अंधेरी रात में,
पाला फिर से गिरेगा.
और,
मैं फिर से ठंडा पड़ जाऊँगा.
पर तब,
तुम मुझे,
कपड़े से ढक लेना,
और,
छोड़ देना उसी पाले के बीच..
मैं इंतजार करूँगा,
तब भी,
रंगीन धूप का..
ऊँचे विशाल पहाड़ो पर,
बहती पानी की धारों पर
और,
तुम्हारे दिए हुए
कपड़े के रेशों पर.
फिर क्या??
पाला परी की तरह,
ऊपर उड़ जाएगा,
और,
रंगीन धूप का असर,
मुझ पर चढ़ जाएगा.

2. तुम कव्वे हो

तुम कव्वे हो,
सही सुना कौआ!
अरे! काले हो,
इसलिए नहीं,
इसलिए कि,
तुम्हारे पंख तोते से,
अच्छे है,
पर!
तुम तोते नहीं हो
क्योकिं तुम,
रटते नहीं हो,
रटते नहीं हो,
तभी,
तुम तोते नहीं हो,
तुम्हारा तोता ना होना,
तुम्हें कौआ बनाता है,
फिर!
जब तुम कव्वे बनते हो,
दिखते हो,
छिटमुट गलियों में,
भुखमरी से जूझते हुए,
और,
तोता पिजरे में बंद,
मिर्ची खाता है,
इसलिए,
वो रटता है,
और,
कौवा नहीं,
तोता बन जाता है,
तुम चिल्लाते हो,
बड़बड़ाते हो,
सबको सुनाते हो,
क्या ?
अरे! वहीं
काऊ काऊ,
तभी,
तुम कव्वे बन जाते हो.

तुम कव्वे हो?
इसलिए नहीं,
कि काले हो;
इसलिए कि,
तुम्हारी चीख परेशान करती है,
सबको,
उनको जो मिर्ची,
खिलाते है तोते को,
और बनाते है,
कुछ और नए कव्वे.
कोई नहीं,
तुम कव्वे हो,
तुम्हें मिर्ची की लठ,
साफ़ करनी है,
जो बिखेर रहे है,
तोते इधर उधर..
तुम सच में,
कव्वे ही हो.

3

3. देह काली थी

देह काली थी,

काली सी, मैली काली,
ऐसी काली निशा सी,
गंध जैसी पिशाची,
पर कमीज तमीज़ से,
खुद को शरीर से चिपकाए,
सहमे-सहमे टंगी थी,
उसकी मैली देह में.
पर कब तक?
क्या तब तक?
जब तक ,
दिख न जाती एक ओज सी देह उसे.
हाँ तब तक ,
जब तक,
मिल न जाती एक ओज सी देह उसे.
पर,
देह ही काली थी,
काली सी, मैली काली,
ऐसी काली दुष्ट सी,
ओज से रुष्ट सी..
कमीज़ खुली नहीं ;
खोली गयी थी,
खोली थी, काली देह ने,
मचलते हुए मनचलाते हुए,
धीरे धीरे, तेज़ तेज़
अचानक से,
सारी सिलाई उधेड़ते हुए,
मानव बंधन तोड़ते हुए,
बेरहमी से,
हँसते हुए,
शरीर थोड़ा कसते हुए,
चिल्ला चिल्ला कर,
गुपचुप,.
यहां वहां लेटकर,
आसपास देखकर,
टेडी टेडी नजरों से,
दर्द देते हुए,
फिर से हंसकर,
हा हा हा हा,
बड़ी निर्दयता से,
जोर से,

जल्दी जल्दी,
धीरे धीरे,
खोल दी गयी थी,
वो कमीज़.
कमीज़ खुली नहीं,
खोली गयी थी.

4

4. तकनीक से सन्देश

वह तकनीक से सन्देश लाया,
ठप्प ठप्प ठप्प ठप्प,
इस ठपठपाहट से,
एक कपकपाहट पैदा हुई,
सन्देश की आत्मा मृत हो गई!
फिर भी बचा रहा सन्देश,
चलते बलात्कार का,
रुके चम्पी बुखार का,
फिर भी पचा रहा सन्देश,
मुर्ख अनजाने प्यार का,
पुत्र स्नेह दुलार का,
वह तकनीक से सन्देश लाया,
टुनु टुनु टुनु टुनु,
इस टुनटुनाहट से,
एक बौखलाहट पैदा हुई,
सन्देश की पहचान स्थूल हो गई!
फिर भी चिपका रहा सन्देश,
गोल बसंती मुस्कान का,
बड़े किसानी उत्थान का,
फिर भी दुबका रहा सन्देश,
युवा क्रांति आह्वान का,
कवच पहने चालान का.
वह तकनीक से सन्देश लाया,
चै, चै, चै, चै,
इस चहचहाट से एक मैलाहट पैदा हुई,
सन्देश की पावनता क्षीण हो गई!
फिर भी गोरा रहा सन्देश,

मंदिर में काले रंक का,
काले पाषाण शंख का,
फिर भी कोरा रहा सन्देश,
मानव मौत के अंक का,
गिद्धों के टूटे पंख का,
वह तकनीक से सन्देश लाया,
हा,हा,हा,हा
इस हाहाहट में,
एक मुस्कुराहट टूट सी गई,
सन्देश की अस्थि अस्थिर हो गई!
फिर भी लड़ता रहा सन्देश,
असल पहलवान ‘असली’ से
मजबूत सुडोल ‘पसली’ से
वह तकनीक से सन्देश लेकर आया.

5

5. आश का चूना

कंकाल की लटकती हड्डियों में,
मांस की पुताई करना,
क्या सुंदरता है?
अगर है, तो सुंदर है,
वह सब,
जिनको पोता है, पोतने वाले ने.
पर हाँ,
यह पुताई की गयी है,
उस मांस के चुने से,
जिसको छूने से फिर से,
दिख पड़ता है कंकाल,
और पोतना पड़ता है, फिर से
मांस का चूना.
कंकाल की लटकती हड्डियों में,
मांस की पुताई करना,
क्या सुंदरता है?
अगर नहीं तो सुंदर है
वह सब,

जिनको बेढंग से पोता है पोतने वाले ने
पर हाँ,
यह पुताई की गयी है,
उस भाव के जूने से,
जिसको छूने से फिर से,
सहम उठता है कंकाल,
और पोतना पड़ता है फिर से,
आश का चूना.

6

6. चित्र बोलता है

चित्र बोलता है,
बुलवाता है,
और कहता है-
मैं रंगीन हूँ या तुम रंगीन हो?
मैंने बोला -
रंगीन नहीं संगीन हूँ मैं.
कैसे संगीन?
संगीन प्रेमी या संगीन अपराधी?
मैंने बोला-
संगीन प्रेमी,

वो हँसा दुबका और,
दुबक कर रंगहीन हो गया!

7

7. किधर है जाना

मैंने नहीं जाना किधर है जाना,
क्या डरती धरती के भूतल में जाना,
या जाना उधर जहाँ प्रेम,
झिल्ली में बिकता, और
खिल्ली में उड़ता
मैंने नहीं जाना किधर है जाना
क्या महकती बस्ती के छल में जाना,
या जाना उधर जहाँ रोदन,
पेट में गिरता, और
मिटटी में चीरता.
मैंने नहीं जाना किधर है जाना...
क्या बिकती बेशर्मी के पल में जाना ,
या जाना उधर जहाँ सुख,
खरीदारी में मिलता,
और उधारी में बिकता,
मैंने नहीं जाना किधर है जाना,
क्या तपतपाती झीलों के जल में जाना ,
या जाना उधर जहाँ कर्म,
क्रिया में हँसता,
और कर्ता में फंसता,
मैंने जाना ही नहीं किधर है जाना.

8

8. वो मरा नहीं शहीद हुआ

कंगन, चूड़ी और पायल की,
झनकार बजी बाजारों में,
चंदन-हल्दी की खुशबू भी,
महक रही गलियारों में।
गोल रसीले लड्डू भी,
मचल रहे है कोने में,
भाभी छोटी मस्त पड़ी है,
काले केश को धोने में।
चांदी के चमकीले बर्तन,
सन्दूकों से मुक्त हुए,
रंग बिरंगी दीवारों से,
कुछ पंक्षी उन्मुक्त हुए।
माँ की आँखों में अश्रु,
पिता याद में डूब चुके,
अब तो नयनों के अश्रु भी,
आँखों में ही सूख चुके।
स्वर्ण आभूषण संरक्षित है,
स्वर्णकार के द्वार में,
मांग टिका भी दिया किसी ने,
बेटी को उपहार में।
नयनों की तीखी पंक्ति,
अब और भी तीखी लगती है,
कभी पलके धीरे-धीरे तो,
कभी पलके तेज़ झपकती है।
पिया के यादों में डूबी,
दुल्हन की हँसी अति शोभित है,
नयनों में खोये फौजी बाबू,
हँसते है और मोहित है
अब बीस दिनों के बाद ही,
ब्याह की खुशी मिल जाएगी,
यम भी ऐसा भूल चुके थे,
पिया लाश अब आएगी।
टूट चुके दुल्हन के सपने,
तोड सके ना अखण्ड प्यार को,
मेरा फ़ौज़ी मर मिटा,
भारत माता के उद्धार को।
बोला था मैंने उसको,
तुम मुझसे ही अब प्यार करो,
मैं ही भारत माता हूँ,
तुम मेरा ही श्रृंगार करो।

कुछ देहाती बैठे है,
जो मुफ्त की रोटी तोड़ रहे,
फिर तुम क्यों भारत माँ के,
पीछे अपना माथा फोड़ रहे।
बंदूक की गोली चलती भी तो,
नेताओ की बोली से,
लहू की रक्तिम धारा बहती,
बस फ़ौज़ी की झोली से।
बोला था उसने मुझको,
अब कैसे तुझसे प्यार करूँ,
भारत माता लहुँ में डूबी,
कैसे तेरा श्रृंगार करूँ।
तू राग मेरे हृदय की है,
पर भारत माता धड़कन है,
वो ही मेरी जान जिंदगी,
उस पर ही सब अर्पण है।
मैं आऊं या ना आऊं,
मेरी वर्दी फिर भी आएगी,
वो ही मेरी शौर्य कहानी,
तुझ पगली को बतलाएगी।
बोल उठी उसकी वर्दी,
वो मरा नहीं शहीद हुआ,
भारत माँ के अखण्ड प्यार में,
तेरे लिए मुरीद हुआ।
कंगन चूड़ी और पायल की,
हाहाकार मची जग तारो में,
चंदन हल्दी की खुशबू भी,
दहक रही अंगारो में।

9. खुले उरोज

एक कोहरे की गहराई में,
बैठ गई कोई स्तन खोले,

कांप उठी तब नीली गेंद
कुल्टी, वैश्या,मस्तन बोले।
मचल गया धन्ना का यौवन,
गलीधारी भगते आये,
दहक उठी स्तन की बाते,
स्तन वाली सब चिल्लाए।
टूटे कमल की पंखुड़ी वाले,
नयनों में अश्रु भर बोले,
एक कोहरे की गहराई में,
बैठ गई कोई स्तन खोले।
कोहरे में कोहराम मचा,
भीड़ अति भी जम आई,
यौवन के इस विलख खेल में,
दिखी मातृ सी परछाई ...
स्तन के जादू के दर्शक,
अब दूरी से दूर हुए,
उहा-उहा के रोदन से..
सब कृतज्ञ मजबूर हुए।
थम से गए करुणा गीत,
उहा-उहा बोले ना डोले,
एक कोहरे की गहराई में,
बैठ गई कोई स्तन खोले।

10. शहर

पता है मैं शहर हूँ, शहर
हाँ-हाँ उन्हीं हरफनमौलाओं,
का शहर,
जो हँसते समय,
बिगड़े दांतो की चमक देखते है,
उनका रोना, श्याल के रोने
जैसा है,
उनकी मुस्कान रहस्यवाद है,
हाँ वो रहस्यवाद,
जिसमें हल्की मौत और दुःख
की परछाई नजर आती है।
बोला था ना मैंने,
मैं शहर हूँ,
अरे उन्हीं साहबो का शहर...

11. क्या होगा ?
क्या होगा?
जब सांसे चलने से मना कर दे,
औऱ ह्रदय अडिग रहे चलने की जिद पकड़ कर,
क्या तब,
द्वंद्व देखने को मिलेगा?
ह्रदय और सांस के बीच,
या ह्रदय साँस को बाहों में भरकर,
उसे मनाने के लिए एक संगीत बजाएगा?
एक ऐसा संगीत,
जिसे सुन, अनुभव कर
साँस तड़पने लगे,
और मजबूर हो जाये,
ह्रदय की प्रेयसी बनने को।
क्या तब,
रोमांस देखने को मिलेगा,
प्रीतम और प्रेयसी के बीच ,
या नटखट चंचल साँस,
जकड़ बना लेगी ह्रदय में,
एक ऐसी जकड़,
जो गाँठो से जकड़ी हो,
औऱ रुकने पर मजबूर कर दे,
ह्रदय के चलने की अडिगता को..
क्या होगा?
जब सांसे चलने से मना कर दे,
और ह्रदय अडिग रहे चलने की जिद पकड़ कर.

12. शेर घास खाएगा

जब धरती में एक भीषण युद्ध छा जाएगा,
देख लेना सब, तब शेर घास खाएगा।
घास खाता शेर क्या दुबला हो जाएगा,
या
मस्ताना जंगल ही मरुस्थल बन जाएगा.
हो जाएंगे कोमल, शेर के भयंकर दांत,
जब वो मंचन करेंगे शिकार को दबोचने का,
फिर हारते दुबकते वो घास पर पड़े
ठंडे पाले की शरण में जाएंगे,
जिससे ये भयानक दांत ऐसे कपकपाएंगे
कि याद आ जाएगी उसे
निर्मम क्रूर शिकारों की
बहती लहू की धारों की
खूनी जंगली गलियारों की
और विशाल पेड़ो की डालों की
जिसे वो समझता था धरती का व्यर्थ।
परमाणु बमों पर हँस जाएंगे लोग
इस भीषण युद्ध में,
हँसने लगेंगे सभी विशाल लम्बी इमारतों पर,
थोड़ी हँसी पैसों के ढ़ेर में भी फूटेगी,
एक मंद हंसी पहाड़ को चीरते बाँध पर बनेगी,
जो धरती के इतिहास को बदल कर रख देगी.
इसी बदलाव में दिखेगा,
घास खाता शेर
मृग और चीतल के बीच,
अपने कोमल दातों से डराता हुआ,
पर
मृग और चीतल की पतली छोटी पूँछ,
मात देगी शेर के दातों को.
जिससे शेर भाग खड़ा होगा
एक नए मैदान की ओर।
इसी मैदान में शेर घास खाएगा,
खाते खाते चिल्लाएगा,
जब धरती में फिर एक भीषण युद्ध छा जाएगा,
देख लेना तब, सब मिट्टी में ढा जाएगा.
ना शेर घास खाएगा
ना कोई रह जाएगा.

13. समस्या ही समाधान.

समस्या थी बहुत जटिल
जिसे सुलझाना था समाधान
और उलझाना समस्या
क्या उलझाकर सुलझाना
फिर कुछ बुन देना
समस्या थी
या
बुनकर का उलझाकर
सुलझाना
समस्या थी?
परेशान थे घोंसले के बुनकर पक्षी
क्योकि समस्या थी बहुत जटिल
क्या उनका घोंसले में बैठना
समस्या थी ?
और उड़ जाना समाधान
या गगन से बिछड़ना
समस्या थी
और हवा से रूठना समाधान.
पता चला ढूढ़ने पर
घोंसले से ज़्यादा समस्या बुनी थी
इसलिए
ना उड़ना समस्या थी
और उड़ जाना समाधान
पर मुझे लगा
उड़ना समस्या है
और विश्राम समाधान.
क्योंकि
मुझे लगा
समस्या ही समाधान..

14. पतझड़

प्रकृति का प्रत्येक वृक्ष,
करता है अपने पत्तों से प्यार,
डालियों से स्नेह और
भुरभुरी मिट्टी से दुलार।
क्या आप समझते है?
पतझड़ के मौसम में,
पेड़ से गिरती
पत्तियों के वियोग को।
मैंने देखा है अक्सर
हरे भरे पेड़ो में,
अनचाही लताओं को लटकते।
जो दिखती है,
पेड़ की पत्तियों से अधिक सुंदर।
पर
क्या आप समझते हो?
पेड़ के उस प्रेम को,
जो करता है वो,
हरी लताओं के बीच
अपनी शुष्क पत्तियों से।
मैं जानता हूँ एक रहस्य
कि, कैसे
पतझड़ के मौसम में
उड़ती पत्तियों के वियोग को,
सहन कर जाता है पेड़।
शायद इसी उम्मीद में,
कि
नई पत्तियों का उगना,
शुरू हो उठेगा बसन्त में।
वहीं पत्तियां,
जिसे पेड़ करता है प्यार
सुदंर लताओं के बीच में
और वहीं बसन्त
पेड़ के जीवन का
रंगीला बसन्त बन जाता है।
तभी तो पेड़,
पतझड़ में भी,
रहता है जीवित

केवल नई पत्तियों और
उस बसन्त की उम्मीद में।
पेड़ गुजरने देता है,
वियोगी पतझड़ के मौसम को,
तभी तो पेड़ और पत्तों का प्रेम,
मुझे अमर सा लगता है,
ठीक वैसा ही
जैसा है
मेरा और तुम्हारा.

15

15. एकदम जुगाड़ से

मैं चला था,
फ़टे नोट की तरह
एकदम जुगाड़ से,
ऐसे जैसे,
घायल पैर चलता है,
रक्त को धूमिल करते हुए,
मुझे चलाया गया,
नजरों में भटकाव पैदा कर ,
एकदम चुपके से,
बीच गड्डी में रखकर,
ऐसे जैसे,
बेचारा बाघ चलता है,
लकड़बग्घो के बीच....
मैं भी चला था,
फ़टे नोट की तरह,
एकदम जुगाड़ से,
ऐसे जैसे
फटा पहिया चलता है,
पथ को भेंट करते हुए,
मुझे भी चलाया गया
चेहरे में मासूमियत पैदा कर,
एकदम चुपके से,
गुदगुदे गोद से चिपकाकर,
ऐसे जैसे,

फटा जूता चलता है,
हर्षोदन के बीच ,
हम चलेंगे
पूरे नोट की तरह,
फ़टे नोट की ताकत समेटते हुए,
एकदम ज़ुगाड़ से...

16

16. रोना था

रोना था,
जबरदस्त रोई,
खनखनाती चूड़ी को तोड़ते हुए,
बिलखती आँखों के अश्रु लिए,
एक असीम मुस्कानी दुःख के साथ,
रोना था,
गजब रोई,
ममता के रिश्ते को तोड़ते हुए,
मलिन असुरो के अश्रु लिए..
एक असीम मुस्कानी मुख के साथ
ख़ैर, रोना था,
मदमस्त रोईं,
मंगल के सूत्र को तोड़ते हुए,
‘उनके’ अपमान के अश्रु लिए
एक असीम मुस्कानी रुख के साथ...

बस रोना था,
वो रो गई,
धरती के बंधन को तोड़ते हुए,
राम नाम के अश्रु लिए,
एक असीम मुस्कानी सुख के साथ....

17

17. पहाड़

बड़ा पड़ा पहाड़ है,
विशाल सी एक ढाल है,
क़दम-कदम पे राम है,
स्थिलता में विराम है,
प्रकृति शोभित रूप में,
मदमस्त सी विराजती,
अद्भुत मस्त कस्तूरी से,
जग में होती आरती।
अश्रु भी चमक रहें,
डमक रहे है कहने में,
अर्थ व्यर्थ अर्थ क्या?
अबकी आजा महीने में....

18

18. लड़ता रहूँगा फिर भी मैं

विकाल में,
अकाल मैं,
लड़ता रहूँगा फिर भी मैं,
काँटे चुभा धरती हिला,
चलता रहूँगा फिर भी मैं.....
प्रसन्नता में,

खिन्नता में,
आगे रहा,आगे रहूँगा,
द्वंद दे,प्रताप दे,
जागे रहा, जागे रहूँगा......
भूत में,
अवधूत मैं,
अब त्वरित बनूँगा मैं,
आमोद ला,अवरोध ला,
अब उज्जवलित बनूँगा मैं

19

19. तुम क्यों डरती हो

मैं जानता हूँ
तुम डरती हो
कही ये प्यार
पिघल ना जाए
हिमालय की बर्फ की तरह
पर
तुम जानती हो,
हिमालय की बर्फ
नहीं पिघलती स्वयं
उसे पिघलाती है
तेज़ गर्मी
जो पैदा होती है
मनुष्य की दुष्टता से
और प्यार भी पिघलता है
मनुष्य की दुष्टता से
इसलिए मुझे और तुम्हे
हम जैसे सभी प्रेमियों को
बचा लेना चाहिए हिमालय
क्योकि
हिमालय का बचना

प्यार के बचने जैसा है
इसलिए
हिमालय से प्यार
दो प्रेमियों का प्यार है
ठीक वैसा
जैसा मेरा और तुम्हारा
अब मैं जानता हूँ
तुम क्यों डरती हो;
हिमालय के पिघलने से..

20

20. बेरंग खुशियाँ

वो डूब गया
छोड़कर गिरगिटिया बादल को
चाँद की पहरेदारी में
रंगीन बादल फिर से ओझल हो गया
विशाल आसमान से
ऐसे ही ओझल होती है खुशियाँ
जो चमकती है किसी के सहारे
छोड़कर किसी की पहरेदारी में
समझना होगा दूधिये बादल को
सूर्य की चमचमाहट
डूबने की आहट है
जो सूर्य के लिए राहत है

क्योकि उसे भी रहता है करना आराम...
किसी का आराम
बेरंग कर सकता है किसी के जीवन को
बेरंग खुशियाँ अच्छी है
रंगीन धोखे से
क्योकि सूर्य डूब कर
छोड़ जाता है बादल को
चाँद की पहरेदारी में.
ठीक वैसे
अजनबी खुशियाँ
छोड़कर चले जाती है हमें
दु:ख की मनसबदारी में.

21. जब हंसी बनी होगी

वो जो हंसना था
कहाँ हंसना था
मुस्कराहट थी

हंसने भर की आहट थी
हंसी व्यंग्य थी
जो थी धरती की व्यंगकारी
मुस्कराहट कला थी
जो थी हंसने की कलाकारी.
मुझे लगता है
रोने और हंसने के बीच
कहीं मुस्कराहट भी होगी
जो दु:ख को पर्दा देने में
कुछ राहत भी देगी
मैं सोचता हूँ
जब हंसी बनी होगी
क्या वो सच में हंसी होगी
या
वो मुस्कराहट होगी
जो सोचने के बाद निकली होगी?
पर क्या सोचा होगा?
शायद यही कि
वो जो हंसना था
कहाँ हंसना था
मुस्कराहट थी

हंसने भर की आहट थी

कवि के विषय में

नमन जोशी (जन्म 1 मई 2001) एक भारतीय लेखक हैं जिन्होंने 14 वर्ष की उम्र में अपनी पहली पुस्तक मैड एलियन लिखी थी। वह 2018-2021 के दौरान उत्तराखंड बाल विधानसभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने तीन मुख्य स्व-प्रायोजित अभियान चलाए जिनमें हिंदी संवाद अपने विषय को लेकर महत्वपूर्ण था।वह किसी सहकर्मी-समीक्षा पत्रिका में साहित्यिक शोध लेख प्रकाशित करने वाले सबसे

कम उम्र के हैं। उन्होंने हिंदू कॉलेज से स्नातक की पढ़ाई पूरी की और अब वह जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर कर रहे हैं। नमन का जन्म चंपावत उत्तराखंड में हुआ था। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही लिखना शुरू कर दिया था. उनकी पहली अप्रकाशित कृति खौफ जेब गली बादल दे थी, जो उन्होंने 10 साल की उम्र में लिखी थी।

कर-कर बहती गंगा का मैं पल-पल बहता पानी हूँ
भारत माँ की पीड़ा की मैं तो एक जुबानी हूँ
प्रकाशन

- रिगी पब्लिकेशन पंजाब द्वारा प्रकाशित मैड एलियन इसे उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत द्वारा लॉन्च किया गया था।
- इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिंदी रिसर्च द्वारा शोध पत्र।
- हिंदी समय की कविता

फिर मिलेंगे 'क्या हुआ' के साथ

"क्या होगा?" की यात्रा यहाँ समाप्त होती है, परंतु प्रश्नों का सिलसिला यहीं थम नहीं जाता। शायद इन कविताओं ने आपके मन में नए सवाल जगाए हैं, या शायद आपके अपने कुछ जवाब सामने आए हैं। क्या होगा सोचने के बाद एक समय आता है जब हमें पता चल जाता है क्या हुआ? इस काव्य संग्रह के अगले अंश में जो हुआ उसका वर्णन किया जाएगा और क्या होगा सोचने के बाद जो नहीं हुआ उसका भी. अपने सवालों को संजोएं, जीवन के अनुभवों से सीखें, और निरंतर खोज करते रहें। यही तो "क्या होगा?" की असली यात्रा है।

कविता का सफर यहीं खत्म नहीं होता। नई जिज्ञासाओं के साथ, नए सवालों के साथ, एक नई कविता की रचना का सिलसिला जारी रहेगा। अगले संग्रह क्या हुआ के साथ.

टाइपिंग के दौरान मैंने पूर्ण कोशिश की है कि इसमें त्रुटियाँ 0 हो पर हो सकता है इसमें त्रुटियाँ हो जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी रहूँगा जिसे अगले संस्करण में सुधारा जाएगा.

अभी कविता और लिखूंगा फिर तुम पंक्ति में आओगे
अभी नमन तो मैं ही हूँ फिर तुम भी नमन कहलाओगे...

अपने विचार साझा करने के लिए संपर्क करे -

namanjoshi543@gmail.com
https://www.instagram.com/kavi_naman/
https://www.facebook.com/naman.joshi.543/

गद्य लेखन (सैंपल)

अभी पिछले कुछ दिनों से मैं इस संताप को लेकर मौन था, क्योंकि भीड़ चीख रही थी और जनमानस में क्षोभ का प्रभाव छाया हुआ था. मुझे पता है कि भीड़ तब तक चिल्ला सकती है जब तक उसमें संघर्ष करने की शक्ति शेष हो, पर जैसे ही वो शक्ति खत्म हो जाएगी भीड़ का अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा.

'मेके फौजी बणन छै' पहाड़ के अधिकांश बच्चे इसी वाक्य के साथ खेलते हुए बड़े होते है, जहां एक ओर समाज का अभिजात्य वर्ग अपने बच्चो को कैट और डॉग सिखाने में व्यस्त रहता वहीं फौजी बनने की अभिलाषा रखने वाले बच्चे अक्सर जंगल में काफल खाते हुए दिखते है. बचपन में उन्हें रिमोर्ट कंट्रोल कार नहीं मिलती, वो एल्युमीनियम के तारों को रचनात्मकता से लपेट कर एक सेल्फ कंट्रोल

कार का निर्माण करते है. पहाड़ के सीढ़ीदार खेतों में जुलाब की बॉल बनाकर उससे खलेना उनमें क्रिकेटर बनने की उमंग पैदा करता है.

भर्ती पहाड़ के युवाओ के लिए किसी भी धार्मिक सामजिक त्यौहार से अधिक महत्व रखती है. मैं इस बात से अवगत नहीं हूँ कि पहाड़ में होली दीपावली के अवसर पर कितने अभिभावक अपने बच्चों के लिए नए कपड़े खरीदते है पर मैंने फ़टे जूते पहनने वाले पिता को भर्ती में जाने वाले लड़के के लिए पीटीशूज और स्पोर्ट्सवियर खरीदते हुए देखा है.

कक्षा के अधिकांश बच्चे जब फिजिक्स केमिस्ट्री और मैथ्स को अपनी जान समझ बैठते है वहीं फौजी बनने की अभिलाषा लिया हुआ लड़का पहाड़ को अपने कदमों से पार करने की योजना बना रहा होता है. ये विचारणीय है, क्या वो सभी लड़के मुर्ख है जो अक्ल आते ही अपनी मौत को दिशा देने में व्यस्त हो जाते है या वो सरकार मुर्ख है जो ऐसे युवाओं को लेकर अधिक संवेदनशील नहीं है. हम सभी युद्धों में शहीद सैनिकों के परिवार की दुर्दशा से वाकिफ है. सरकार के लिए सैनिकों का शव भावनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ाने का नमूना मात्र है, नेताओं के लिए ये अपने व्यक्तित्व पर सितारे चमकाने का क्षण है, और भीड़ जिसकी कोई शक्ल नहीं होती वो इसे मेले की तरह लेती है. परन्तु दुःख का वास्तव अनुभव उस लड़के का भवन करता है जिसमें कुछ ही साल पहले उसका विवाह हुआ था.

बच्ची बोल पाती है या नहीं, मुझे ये भी नहीं पता, पर मैं ये स्वाभाविक रूप से जानता हूँ कि अगर वो बोल भी पाती तब भी वो स्तब्ध रहती. उसका स्तब्ध रहने का रिश्ता इस बात से नहीं होता कि उसे अपने पिता के शहीद होने का गर्व नहीं है बल्कि वो इस बात को लेकर चिंतित रहती कि इन सबके बीच उसने अपने पिता को खो दिया. हम जानते है कि पिता और फौजी दो अलग-अलग चरित्र है. फौजी की मृत्यु जहाँ शहादत है वहीं पिता कि मृत्यु एक आकस्मिक घटना. शहीद का नाम अमर रहना चाहिए, और उसकी शहादत को मापने का अधिकार इस समूचे संसार में किसी को नहीं दिया जा सकता. ये पूछना कि उसके द्वारा कितने आतंकियों को ढेर किया गया उसकी शहादत का अपमान है.

मैं समझता हूँ कि भीड़ को समूह के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है. शहीद का स्मारक जिले में बनेगा या नहीं इस बात को लेकर सरकार से संघर्ष करना सरकार को अँधा साबित करता है. अक्सर हम देखते है जब कक्षा में मास्टर सवाल करता है तब सारे बच्चे एक साथ बोल उठते है और अधिक शोर के कारण मास्टर को जवाब सुनाई ही नहीं पड़ता है, ऐसे में मास्टर एक-एक करके जवाब बताने को कहता है और तब उस एक ही सवाल के बहुत से जवाब मास्टर को सुनाई पड़ते है. स्पष्ट है कि अधिक कोलाहल कौतुहलता को नष्ट कर देता है. मैं कदापि नहीं चाहता कि शहीद को लेकर समाज के किसी भी वर्ग की कौतुहलता कभी भी नष्ट हो.

तुम हरियाली हो,
एकदम हरी-हरी,
बसंत में मैंने देखा है अक्सर.
रंग बिरंगे पेड़ो के साथ तस्वीर खिंचाते हुए.
उनको जिनका एक रंग नहीं.
लेकिन तुम्हारा एक रंग है..
जिसे मैं हरा कह देता हूँ..
-नमन जोशी

क्रियाकलाप

आप इन कविताओं में से कोई भी एक कविता चुने और सोचे कि अगर मेरी जगह आप होते तो आप उस शीर्षक में क्या लिखते. ये पृष्ठ आपका है. इस पृष्ठ को स्कैन कर मुझ तक अवश्य पहुचांए (namanjoshi543@gmail.com)

क्रियाकलाप